गीना देवी शोध संस्थान
An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

ISSN : 2321-8037
दिसम्बर – 2021
वर्ष – 9, अंक – 5

संगम Sangam

Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

डॉ. विश्वकीर्ति स्मृति अंक

जन्म :
17
सितम्बर
1958

स्मृति शेष :
03
दिसम्बर
2015

संरक्षक :
हरविन्द्र कमल

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पियर रिव्यूड एवं रैफरीड रिसर्च जर्नल

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	हरविन्द्र कमल	7–7
2.	हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना के स्वर	कृष्णा अवतार	8–16
3.	आदिवासी अस्तित्व का संकट	अंजना ए.एस.	17–19
4.	महात्मा गाँधी के अर्थव्यवस्था सम्बंधी विचार	प्रमिला टोप्पो	20–26
5.	स्वयं प्रकाश की कहानियों में स्त्री	कनकलता. ओ	27–31
6.	कन्नड़ साहित्यिक डॉ. काशीनाथ अंबलगे की कविताओं में सामाजिकता	डॉ. शिंदे मालती धौंडोपन्त	32–36
7.	महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अध्ययन	षमीना.टी	37–43
8.	हिन्दी भाषा की प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियाँ	डॉ. शोभना कोक्काडन	44–49
9.	रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य संग्रह में राष्ट्रीय चेतना	सविंद्र शर्मा	50–54
10.	राजस्थानी साहित्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. जय प्रकाश सिंह	55–60
11.	हिन्दी काव्य जगत में कलामयी कवयित्रियों का योगदान	डॉ0 कचंनपुरी श्रीमती रंजना रानी	61–65
12.	अलिविलासिसंलाप काव्य का प्रतीकात्मकबोध	शुभम शर्मा	66–68
13.	'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में चित्रित आधुनिक नारी : एक विश्लेषण	डॉ. संध्या. एस	69–71
14.	गोविन्द मिश्र के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. किरण गिल	72–79
15.	धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों पर निरूक्त का प्रभाव	डा. विशाल भारद्वाज	80–84
16.	फिल्म रूपांतरण : पाठ और प्रदर्शन की अंतर्क्रिया	डा. भावना	85–89
17.	संस्कृत लोककथाएं : उद्भव एवं विकास	डॉ. गोविन्द कुमार 'धारीवाल'	90–94
18.	सामाजिक यथार्थ की परते खोलता प्रेमचंद का साहित्य	Dr. Nusrat Jabeen Siddiquee	95-99
19.	स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में नासिरा शर्मा की कहानियाँ : एक विश्लेषण	डॉ. वीणा.जे	100–102
20.	हिन्दी की दिशा और दशा	रेशमा त्रिपाठी	103–108
21.	हिन्दी साहित्य के आदिवासी विमर्श में वन (जंगल) की अवधारणा	डॉ. साईनाथ नागनाथगणशेटवार	109–112
22.	संतकाव्य : सामाजिक समरसता का संदेश	डॉ उर्मिला शर्मा	113–116
23.	हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकारों की कहानियों में व्यक्त महानगरीय संवेदना	डॉ. भागेश देवन	117–125
24.	**A GEOGRAPHICAL ANALYSIS OF CRIME AGAINST WOMEN IN HARYANA: A CASE STUDY OF HISAR DISTRICT (1991-2015)**	**Jyoti**	**126-130**

संगम शोध पत्रिका
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed & Referred Journal
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
SANGAM ISSN : 2321-8037
वर्ष-9, अंक-5,
दिसम्बर-2021
पृष्ठ : 55-60

राजस्थानी साहित्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

–डॉ. विष्णु कुमार,
–डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
–डॉ. जय प्रकाश सिंह, सहायक आचार्य (दूरस्थ शिक्षा)
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं–341306 (राजस्थान

शोध सारांश :–

प्रस्तुत शोध में शिक्षा, षिक्षा से जुड़े विचारों, संस्कारो और मूल्यो को सम्मिलित किया गया है। इस शोध के निहितार्थ में मूल्य, मूल्यो के प्रकार, मूल्य शिक्षा के राजस्थानी स्वरूप पर चिन्तन किया गया है। भारत एक बहुल प्रान्त वाला देश है। यहॉ के विभिन्न राज्य, राज्य नहीं एक 'छोटा देश' ही है, अलग बोली, पहनावा, संस्कार, संस्कृति मानो यहॉ विविधता में भी एक समग्र रूप से 'एकता' की भावना से सूत्रबद्ध है। अपने देश की इसी विविधता और अपने प्रान्त की इसी विशेषता से आकृष्ट होकर इसे लघु शोध का विषय चुना गया है और मूल्य, मूल्यों के विभिन्न रूपो पर यहॉ के मनीषियों के विचारो के संकलन का कार्य किया गया है। इस शोध का निहितार्थ राजस्थानी साहित्य में वर्णित मूल्यों, मूल्यो के रूपो, शिक्षण के साथ उनके सम्बन्धो की ओर रहा है।

कन्हैयालाल सेठिया ने मातृभाषा शिक्षण, 'चन्द्र' ने सामाजिक जन चेतना, बी. एल. माली, लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत ने बाल मनोविज्ञान के स्तर पर शिक्षण की संकल्पनाएं दी है। इस शोध में निहित शैक्षिक मूल्य, विध ाार्थी, शिक्षक, समाज तीनो के आपसी समन्वय और संबंधो पर टिके है। यदि शिक्षक व्यवहार में ठीक होगा तो विधार्थी भी उसका अनुसरण कर स्वयं का निर्माण करेगा नहीं तो गलत आदतों का चलन तो शीघ्रता से होगा ही। अपने समाज, वर्ग में कैसे रहना है, या कैसे जीना है, ये तरीका सिखाना वो भी सहजता से शिक्षक के लिए एक चुनौति है। समाज में साहित्यकार भी सहजता से शिक्षक के लिए चुनौती है। समाज में साहित्कार भी परोक्ष रूप से शिक्षक की भूमिका निर्वहन करते रहे है, उसकी सार्थक भूमिका का चित्रण इस शोध का परोक्ष रूप में लक्ष्य रहा है। विधार्थी, समाज साहित्य, शिक्षक का समन्वय समाज को 'मूल्यवान' बनाये यही शोध का मुख्य निहितार्थ रहा है।

प्रस्तावना :–

राजस्थानी भाषा मूलतः हिन्दी परिवार का ही सदस्या हैं। वृहद एंव विभिन्नताओं से भरे इस प्रान्त के संदर्भ मे कहा जाता है कि 'चार कोस पै पाणी बदलै, आठ कोस पै वाणी' ये कहावत राजस्थानी के ही रूपों

को मेवाड़ी, मारवाड़ी, हाड़ौती, दुढांडी आदि रूपों को इंगित करती है। राजस्थानी भाषा का साहित्य अपने आप में काफी सुमृद्ध एंव वैभवशाली रहा है। साथ ही यह सम्पदा इतनी सहज एंव व्यापक रूप में जन–मानस के नित्य प्रति के व्यवहार में शामिल रही है कि जाने–अनजाने यहॉ के बालको को शैक्षिक मूल्य जैसे–बड़ो का आदर, देश–प्रेम पर्यावरण चेतना, अतिथि सत्कार, पारिवारिक प्रेम सहज ही प्राप्त हो जाते है। अंग्रेजी शासन काल में भी राजस्थानी कविता के ओजपूर्ण स्वरो ने 'नैतिक मूल्यों व देष की रक्षार्थ' आवाज बुलन्द कर लोगो में नया उत्साह भरा था।

केसरीसिंह बारठ, सूर्यमल्ल मिश्रण, शंकरलाल सामोर, अमरदान लालस जैसे परम्परागत प्राचीन कवियो कृतियों में ऐसे मूल्यो का अकूत भण्डार छिपा है। राजस्थानी साहित्य में बीसवीं शताब्दी से नये युग का उदय हुआ माना जाता है। मारवाड़ी हितकारक पत्र, मारवाड़ी मित्र, जयनारायण व्यास द्वारा 'आंगीबांण' साहित्यिक रचनाओ का नया युग नव प्रभात ले उदय हो रहा था। शोध सम्बन्धी पत्रिकाओ मे 'राजस्थानी' राजस्थान भारती के अंको मे श्रीचन्द राय, भंवरलाल नाहटा, कन्हैयालाल सेठिया जैसे रचनाकारों की मौलिक कहानियॉ का प्रकाशन हुआ। प्राचीन एंव आधुनिक राजस्थानी साहित्य के कई रूप यथा कविता, कहानी, नाटक प्रचलित रहे है। इन रचनाकारों के विषयों में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक जन चेतना प्रमुख रहे है। सामाजिक विषयों पर कन्हैयालाल सेठिया, अन्नाराम सुदामा, बी.एल.माली, अशान्त, लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत, डॉ. मनोहर शर्मा, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' जी ने अपनी लेखनी का प्रयोग कर समाज को नयी चेतना दृष्टि प्रदान की हैं।

ऐतिहासिक विषयों पर लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत, डॉ. संस्कर्ता, श्रीलाल जोशी लेखको ने अपनी कलम उठायी है। काव्य रचनाओं ने भी शैक्षिक मूल्यो का सरल रूप दिखाई देता है।

राजस्थानी साहित्यकारों के अनुसार मूल्य शिक्षा का महत्व :–

1. बी.एल. माली

(1) नीतिगत बाते :– शिक्षण के साथ सिखाई जाए, व्यवहारिक जीवन का उदाहरण देकर, कथा कहानियों के माध्यम से भी यह उद्देश्य पूरा किया जा सकता है। 'किली–किली कटकौ' रचना में बालपयोगी रचनाओं के द्वारा प्रेम, स्नेह, करूणा, पारिवारिक स्तर की बातों का सहज रूप में शिक्षण किया गया है।

(2) शिक्षा का महत्व :– बोलतां आखर रचना में अषिक्षित होकर सहे जाने वाले अत्याचारों के वर्णन से बालको में शिक्षा के प्रति जागरूकता की बात कही गयी है।

(3) जीवन मूल्यों का शिक्षण :– जीवनोपयोगी, व्यवहारिक आदतें, बाते यथा बड़ो का सम्मान, छोटो के प्रति स्नेह, खेल–भावना के साथ विद्यालयी जीवन जीना, समाज के साथ सहकारिता का भावना रखना, बाल किशोर वर्ग के लिए अत्यावश्यक है और साथ ही समाज व परिवार का भी दायित्व है कि बालकों को ऐसे कार्यो के प्रति पेरित किया जाए।

(4) मातृभाषा के प्रति आदर :– राजस्थान प्रान्त के होने के कारण नहीं बल्कि हर भाषा–विविधता वाले प्रदेश के लेखको ने भी मातृभाषा (स्थानीय) के प्रति आदर भाव की अनुशंसा की है, यदि बालक को उसकी मातृभाषा में शिक्षण दिया जाये या संस्कृति परक बातें सिखाई जाये तो वह अधिक स्थायी होगी।

(5) पाठ्यक्रम के प्रति विचार :– बी.एल. माली जी ने पाठ्यक्रम के प्रति कोई विशेष बात न कहकर 'मातृभाषा शिक्षण' की ही बात कही है।

(6) गुरू सम्बन्धों पर विचार :– शिक्षाविद की भॉति नही बल्कि एक सामाजिक लेखक की भॉति इन्होने भारतीय परम्परानुरूप गुरू शिष्य के बीच सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों की बात कही है।

2. कन्हैयालाल सेठिया

(1) अणुव्रत का समर्थन :– 'सतवाणी' रचना में सेठिया जी ने पंच महाव्रतों, अणुव्रतो, सम्यक ज्ञान, चरित्र दर्शन की प्रेरणा दी है उनके अनुसार विधार्थी शिक्षक दोनो के चरित्र, जीवन में पवित्रता होनी आवश्यक हैं।

(2) शाश्वत मूल्यों में निष्ठा :– सत्य, सुख, दुःख जैसे जीवन के व्यवहारिक व शाश्वत मूल्यपरक पक्ष में विधार्थी को सम्भावी होकर जीवन जीना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह अपने छात्रो में अपने जीवन उदाहरणों से इन मूल्यों का विकास करे।

(3) नीतिपरक मूल्यों में आस्थावान :– 'गलगचियों' के माध्यम से सेठिया जी बुर्जगो द्वारा कही जाने वाली लोकोक्तियों, मुहावरों का संक्षिप्त चित्रण किया है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जिन नीति जन्य बातों क्षमाभाव, वीरता, सबके लिए प्रेम, करूणा को हम भूल रहे है, का पुनः स्मरण किया गया है।

(4) शिक्षा के बिना समाज का उद्वार नही :– सामाजिक व स्वउत्थान हेतु सेठिया जी ने शिक्षा को महत्व दिया है, उनके अनुसार अशिक्षा से समाज में अव्यवस्था होगी और कल्याण का मार्ग शिक्षा से ही प्रशस्त होगा।

3. शिवचन्द भरतिया

(1) शिक्षा से समाज का कल्याण :– 'कनक सुन्दर' उपन्यास तके इन्होने दो परिवारों की टकराहट वैचारिक भिन्नता को स्पष्ट किया है। वस्तुतः वर्तमान में भी हमारी यही समस्या दृष्टिगत होती है। यदि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की मानसिकता में परिवर्तन लाया जाये तो ऐसी समस्याएं नही होगी।

(2) 'सादा जीवन उच्च विचार' की पुष्टि :– 'केसर विलास' में भरतिया जी ने दिखावटी जीवन और फैशनपरस्ती के नाम पर आर्थिक, सामाजिक पक्ष को अधिक उभार दिया है। छात्र जीवन में भी शिक्षक यदि छात्रो को 'सादगी, सहिष्णुता' जैसे मूल्यो की ओर उन्मुख करे तो शिक्षा इन सामाजिक बुराईयों को दूर कर सकेगी।

(3) पारिवारिक जीवन मूल्यों की अनुशंसा :– परिजनों से प्राप्त स्नेहिल व्यवहार, बड़ो के प्रति सम्मान, कर्तव्यकर्त्ता व्यक्ति को भावी जीवन में सुखद बनाती है। इसी धारणा की पुष्टि भरतिया जी अपने रचना – चरित्रो के माध्यम से नाटको द्वारा भावी पीढ़ी को दी है।

4. लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

(1) नैतिक गुणो का विकास :– बालकों में नैतिक गुण सत्य, दया, प्रेम आदि का बीजारोपण परिवार में ही दादी–नानी की कहानियों से तो किया ही जाता है, साथ ही विद्यालय के परिपेक्ष्य में इसें हम आधुनिक चित्रकथा शैली से भी जोड़ सकते है। भूल भाव तो शिक्षा के उद्देश्य से ही है।

(2) स्थानीय इतिहास का शिक्षण :– स्थानीय व लोक कथा शैली की बातों, विवरणों, साहित्य रचनाओं से बाल–किशोर वर्ग को हम इतिहास परक बाते सहज रूप में सिखा सकतें है। शिक्षक द्वारा स्थानीय इतिहास परक बातो का उल्लेख किया जाना चाहिए।

(3) अतीत व वर्तमान में सामंजस्यता :– राणी जी केवल लकीर के फकीर बने रहने के बजाय आधुनिकता

व प्राचीनता के समन्वय पर बल देती है। इनका मानना है कि परम्पराओं, शिक्षा नीतियों में भले ही बदलाव ही परन्तु भारतीय संस्कृति के सनातन, शगवत मूल्य शिक्षण को पाठ्यक्रम में सहेजे रखा जाये।

5. डॉ. मनोहर लाल शर्मा

(1) लोकहित का समर्थन :– डॉ. शर्मा की रचनाओं में जन कल्याण का भाव निहित है। 'राजा के सींग' कहानी के माध्यम से इन्होने किसी की कमजोरी को मजाक बनाने की बात गलत अनुचित कही है।

(2) नीतिगत बातों का चित्रण :– प्रसंगो, कहावतो के माध्यम से 'गागर में सागर' भरने का कार्य किया गया है। नीतिप्रद बाते संकेत रूप में समझाने का प्रयास किया गया है। नीतिप्रद बाते संकेत रूप में समझाने का प्रयास किया गया है। बालोपयोगी साहित्य के अनुसार सहज रूप में मूल्य की बात कहकर बालको को उस बात को सिखाया जा सकता हे। जैसे सत्य महता बताने के लिए 'असत्य भाषी व्यक्ति को होने वाली हानियां, दुष्परिणाम कथा के माध्यम से समझाये जाये।

(3) सामाजिक समस्याओं के निवारण में शिक्षा का महत्व :– 'कन्यादान' कहानी संग्रह के माध्यम से समाज की परम्पराओं दहेज समस्याओं व बालिकाओं के प्रति उपेक्षित मानसिकता का चित्रण किया है। साथ ही डॉ. शर्मा ने शिक्षा के द्वारा इन समस्याओं में शिक्षक–शिक्षार्थी वर्ग से जन चेतना के लिए कुछ करने की आशा भी व्यक्त की है।

(4) प्राचीन मूल्यों के प्रति आस्था :– भारतीय संस्कृति के शाश्वत गुणों में निष्ठा और आस्था बनाये रखने की बात भी शर्मा जी कही है। निज भूमि, इतिहास पर गौरव करना हम अपने विधार्थियों को भी सिखायें यह आशा उन्होने शिक्षा क्षेत्र से की है।

समस्या का औचित्य :–

वर्तमान शिक्षा जगत की सबसे बड़ी चुनौती 'छात्रो की मूल्यहीनता' रही है। इसके निवारण हेतु बार–बार मूल्य शिक्षा की बात कही जाती है। मूल्य शिक्षा से हमारा तात्पर्य विधार्थी वर्ग के आचरण व्यवहार में उन गुणो के प्राकट्य से है जिनसें वह अपना ओर अपने समाज का विकास कर सके। राजस्थानी साहित्य की विशद् परम्परा सामाजिक, राजनैतिक, मानवीय स्तर पर पाठको के हृदय को छूती है। इसमें निहित शैक्षिक मूल्यों के साथ–साथ आचार व्यवहार की बाते भी समृद्धशाली बनाती है।

इस शोध का उद्देश्य वर्तमान समस्याओं व मूल्यों में कमी, नैतिकता में कमी मानसिक अस्थिरताओं के निवारण में साहित्य की भूमिका का विश्लेषण करना रहा है। साहित्य जन मानस के साथ सरलता से जुड़ सकता है और गहनतम बाते भी सहजता से कह सकता हैं। राजस्थानी भाषा का गौरवपूर्ण इतिहास, वर्तमान विधार्थी जाने और उससें मूल्यों को ग्रहण करे, ताकि पारिवारिक स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक शिक्षा के मूल उद्देश्य सर्वागीण विकास की अवधारणा सार्थक सिद्ध हो सके। मूल्य संस्कार प्राप्त पीढ़ी अपने आप को हर विपरीत स्थिति में सम्भाल सकेगी और ऐसी भावी पीढ़ी से इतिहास पुनः गौरवान्वित होगा। राजस्थानी भाषा की कतिपय ऐसी विशेषताओं के कारण ही वर्तमान में पुनः 'मातृभाषा शिक्षण' की संकल्पनाएं पुष्ट होने लगी है।

मेरा ऐसा विचार है कि 'मातृभाषा शिक्षण' का मूर्त रूप यदि शिक्षा में पदार्पण करेगा तो वर्तमान की आंग्लभाषी शिक्षण संस्थाओं मे अभिभावकों की होड़ कम होगी और हमारे भावी विद्यार्थी अपनी भाषा, जाति, समाज पर गर्व करने का हौसला जुटा लेगे। राजस्थानी भाषा अपने प्रान्त, अपने घर में ही उपेक्षित है, ऐसी स्थिति में

किये जा रहे अनेक दिग्गज व विद्वजनो के सहयोग सागर ने मेरा शोध प्रयास कदाचित तिल मात्र भी स्थान प्राप्त कर सके तो मेरा यह उद्देष्य सार्थक सिद्ध हो सकता है।

समस्या कथन :– ''राजस्थानी साहित्य मे निहित शैक्षिक मूल्यो का विष्लेषणात्मक अध्ययन''

शोध–विधि :– विश्लेषणात्मक विधि।

शोध के उद्देष्य :– राजस्थानी साहित्यकारो की कृतियों में निहित शैक्षिक मूल्यों की खोज करना।

शोध के निष्कर्ष :–

1. शैक्षिक मूल्य जीवन जीने के व्यवहार और आदतो में वे वांछित परिवर्तन है, जिनके द्वारा व्यक्ति अपनी और अपने समान के हितो की पूर्ति के लिए करने में सक्षम बनता है।

2. शोध के विषयानुसार राजस्थानी लेखको, साहित्यकारो के अनुसार प्राचीन एंव आधुनिक शैक्षिक मूल्यों में कोई समयानुसार बदल आया है। आधुनिक जीवन शैली में प्राचीन मूल्यों जैसे शान्ति, भाईचारा, बन्धुत्व, देशप्रेम की नितान्त आवश्यकता बनी हैं।

3. शैक्षिक मूल्यों का जीवन में अनुकरण से भावी पीढ़ी अपने कोलाहल, प्रतिस्पर्धापूर्ण जीवन में शान्ति, सन्तोष का अनुभव कर सके तो मूल्यो की सार्थकता सिद्ध होगी। प्राचीन एंव नवीन स्तर साहित्यकारो का अथक प्रयास सामाजिक जन चेतना, धार्मिक मूल्यों ने आस्था बढ़ाने की आरे अधिकाधिक रहा है, क्योकि साहित्य की नैतिक जिम्मेदारी समाज के प्रति सदैव रही हैं।

4. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक मानवीय नही मषीनी माध्यम बनता जा रहा है, जो कि आधुनिकता की दृष्टि से भले ही उपयुक्त हो मानवीय दृष्टि से ऐसा शिक्षक केवल ज्ञान दे सकता है, व्यवहार, चरित्र नही। आज की शिक्षा प्रणाली में इस शोध का निष्कर्ष शिक्षक की व्यवहार भूमिका–निर्वहन से सम्बन्धित रहा हैं।

5. परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है। सयुक्त परिवार में एंव एकल परिवार में पले बढ़े बालको के शैक्षिक मूल्य भले ही समान होगे पर परिवार में उनकी भूमिका निर्वहन में परिवर्तन हमें अवश्य ही परिलक्षित होंगा।

पारिवारिक प्रेम, संस्कार, सौहार्द्व, बड़े–छोटे के प्रति व्यवहार में शालीनता, आदर भाव की वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता है। आधुनिकता की दौड़ ने पारिवारिक संबंधो मूल्यो दोनो को हाशिये पर ला दिया गया है। वर्तमान आधुनिक साहित्य मे इन्ही दुर्गुणो, परिणामों पर चिन्तन प्रक्रिया है और अपनी लेखनी से ऐसे मूल्यहीन समाज की भावी पीढ़ी का चित्रण कर 'मूल्यों' की आवष्यकता का प्रतिपादन करने का प्रयास किया गया है।

6. परिवार में प्रेम, शान्ति, करूणा, वृद्धो का आदर, अतिथि का सममान, बालक सहज ही सीख लेता है। आजीवन ये मूल्य उसके सामाजिक, व्यवहारिक जीवन मे सहयोग करते है।

7. विधार्थी जीवन में यदि विद्यालय, शिक्षक द्वारा इन मूल्यो का विकास किया जाये तो बालक सदैव इन मूल्यों से अपने जीवन मे सम्मान, प्रतिष्ठा, गरिमा को प्राप्त कर सकेगे। इन मूल्यों के द्वारा वे समाज के प्रबुद्ध नागरिक बनकर सम्मान की प्राप्ति करेगे।

8. वर्तमान युग की आपाधापी में हमे हमार पुरातन संस्कारो की जड़ो की ओर लौटाना होगा। जड़ को पुनः सींचना होगा 'मूल्य रूपी जल' इस समाज रूपी वृक्ष को स्थायित्व प्रदान कर सकेगा हमारे विधार्थी जो भावी भविष्य के राजनेता, धर्मगुरू, प्रतिष्ठित पढो के स्वामी बनेगे यदि 'मूल्यवान' होगे तो हमारा देश, समाज भी मूल्यवान बनेगा, अर्धवान बनेगा।

9. इस शोध का उद्देष्य षिक्षा से भले ही जुड़ा है, क्योकि व्यक्ति अकेला कुछ नही कर सकता। उसके परिवार, समाज, रच का स्वं के साथ संबंध ही उसका जीवन तय करता है। इन लक्ष्यो की पूर्ति के लिए समाज के अनुभवी लोगो की कथा कहानी, परम्परा, साहित्य, साहित्यकार, परिवार सभी समग्र रूप से सहयोगी रहे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. भाई योगेन्द्र जीत, शिक्षा में आधुनिक प्रवृतियां, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. चुण्डावत रानी लक्ष्मी कुमारी, मूमल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
3. गरवा रामकुमार, राजस्थानी गद्य शैली, कादेवनागर प्रकाशन, चौड़ा।
4. कर्णावट देवेन्द्र कुमार, यह क्या, गांधी सेवा सदन, राजसमंद।
5. लालस सीताराम, राजस्थानी व्याकरण, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
6. नानूराम, राजस्थानी लोक साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
7. नानूराम, बालकां हेतु सीख, लोक साहित्य प्रतिष्ठान, कालू बीकानेर।
8. पाठक पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. शर्मा लक्ष्मीकान्त, राजस्थान का संकालिन कथा साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
10. सेठिया कन्हैयालाल, ग्लगचियो, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
11. सिंह विजेन्द, त्यागी ओकांरसिंह उदेयमान भारतीय समाज और शिक्षा अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, जयपुर

–डा विष्णु कुमार
प्लाट नं.–341, बरकत नगर
टोंक फाटक, जयपुर–302015 (राज.)
Email id Kumarvishnu1975@gmail.com
Mob.N0. 09460152946